संचित कर्म

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

संचित कर्म का अर्थ है–इकट्ठा किया हुआ कर्म। संचित कर्म की परम्परा अनादिकाल से चल रही है। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक सभी प्राणी अपने जीविकोपार्जन के लिए अच्छे या बुरे मार्गों का अनुसरण करते हैं। प्राणियों के कर्म अलग–अलग होते हैं। संचित कर्म के अनुसार ही जीव योनियां प्राप्त होती है। चार गति और चौरासी लाख जीव योनियां है। कर्म के अनुसार ही शरीर बदलता रहता है। जिसका जैसा कर्म है उसको वैसी जीव योनि प्राप्त होती है। यदि कर्म अच्छे हैं तो अच्छे कुल में जन्म होता है और अच्छी योनि प्राप्त होती है। यदि कर्म बुरे हैं तो बुरा कुल प्राप्त होता है और बुरी योनि भी प्राप्त होती है। जन्म का सम्बन्ध कर्म से है।

संचित कर्म अनेक पूर्व जन्मों से लेकर वर्तमान में किये गये कर्मों के संचय को संचित कर्म कहते है। यह जन्म–जन्मान्तर का कर्म है। उसमें नये–नये कर्म जाकर एकत्र होते रहते है। मनुष्य के अनेकों जन्मों के पुण्य और पाप कर्मों का संचय संचित कर्म है। गीता में कहा गया है कि हे अर्जुन मेरे और तुम्हारे अनेक जन्म हो चुके हैं उन सबको मैं जानता हूं किन्तु तुम नहीं जानते। ईश्वर अनन्त बार जन्म लेते हैं और जीवन भी अनन्त बार जन्म ले चुका है। यहां अनन्त ब्रह्माण्ड है। अनादि काल से ब्रह्माण्डों का प्रलय और प्रकट होता रहता है। हमें पूर्वजन्म के किये गये कर्मों का ध्यान नहीं रहता। केवल इस जन्म में किये गये कर्मों का थोड़ा सा ज्ञान रहता है।

मानव जन्म में जो कर्म किया जाता है उसे ईश्वर को को अर्पित करके करना चाहिए। अपने को कर्ता मानकर किया गया कर्म अहंकार को जन्म देता है। इसलिए मनुष्य को निष्काम कर्म करना चाहिए। निष्काम कर्म का तात्पर्य है ऐसा कर्म जिसे बिना किसी लालसा, बिना किसी कामना और फल की इच्छा किये बिना किया जाये। ऐसा कर्म निष्काम कर्म कहलाता है।

कामना पूर्वक किया गया कर्म बंधन का कारण होता है। फल की इच्छा का त्याग कर जो कर्म किया जाता है वह बंधन का कारण नहीं होता, क्योंकि यह कर्म आसक्त रहित है।

भारतीय संस्कृति में निष्काम कर्म को बहुत महत्व प्रदान किया गया है। श्रीमद्भगवत्गीता का मूल सार ही निष्काम कर्म योग है। गीता के प्रथम छः अध्यायों में कर्ममार्ग का वर्णन है। कर्ममार्ग का तात्पर्य है जीवन में कर्म करो, किन्तु कर्मफल की इच्छा मत करो। कर्मफल की इच्छा करने से यदि मनोनुकूल फल की प्राप्ति नहीं होती तो प्राणी को दुःख होता हैं इसलिए फल का त्याग करके कर्म करना चाहिए। जीवन में निराशा का भाव नहीं लाना चाहिए।

चारों आश्रमों, पुरुषार्थ चतुष्टय इत्यादि में कर्म करने की ही प्रेरणा दी गई है। हे मानव ! तुम कर्मयोगी बनो। बिना कर्म किये मानव का जीवन निष्क्रिय हो जाता है। वह समाज पर भारभूत हो जाता है, इसलिए सदैव कर्म करते रहना चाहिए। दूसरा महत्वपूर्ण संदेश भक्ति मार्ग का है। भक्तिमार्ग का तात्पर्य है– श्रद्धापूर्वक ईश्वर में विश्वास करना। ईश्वरार्पण बुद्धि से किया गया कार्य अहंकार को समाप्त कर देता है। इसलिए जो भी कार्य किया जाये वह कर्ता बुद्धि से नहीं बल्कि ईश्वर को समर्पित करके किया जाता है। गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो व्यक्ति मुझको सर्वत्र और सभी प्राणियों में मुझको देखता है वह मेरे लिए नहीं मरता और मैं भी उसकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहता हूं। यह सम्पूर्ण संसार धागे में मनके की भांति मुझमें पिरोया हुआ है। सभी जीव मेरे अंश है और मैं सभी में हूं। यही गीता का भक्तिमार्ग है।

तीसरा महत्वपूर्ण संदेश ज्ञानमार्ग का है। ज्ञान से तात्पर्य सम्यक् ज्ञान से है। गीता कहती है कि बिना ज्ञान के मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं। अज्ञानी व्यक्ति संसार में भटकता रहता है। सत्य का स्वरूप उसे दिखलायी नहीं देता। सत्यज्ञान प्राप्त करने के लिए शास्त्रों का अध्ययन, गुरु का सान्निध्य आवश्यक है। गुरु ही अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। जिससे प्राणी में ज्ञान का बीज अंकुरित होता है। इस प्रकार कर्मभक्ति और ज्ञान गीता के मूलमंत्र है। गीता सर्वेश्वरवाद का उपदेश देती है। सर्वेश्वरवाद का अर्थ है सृष्टि के कण–कण में ईश्वर की सत्ता है। सृष्टि का कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जहां ईश्वर की सत्ता न हो। ईश्वर सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में व्याप्त है। सगुण रूप में मूर्तिपूजा का विधान किया

गया है और निर्गुण रूप में ईश्वर सभी विशेषणों से परे, इन्द्रियों से परे केवल ज्ञानचक्षु के द्वारा चिंतनीय है।

गीता में प्रवृत्ति और निवृत्ति का भी उपदेश दिया गया है। प्रवृत्तिमार्ग गृहस्थ मार्ग है और निवृत्तिमार्ग संन्यास मार्ग है। प्रवृत्तिमार्ग में गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए मोक्ष की प्राप्ति संभव हो सकती है यह बतलाया गया है। निवृत्तिमार्ग संसार त्याग का मार्ग है। इसके द्वारा भी मुक्ति प्राप्त की जाती है किन्तु यह मार्ग कठिन मार्ग है। गीता विश्व प्रतिष्ठित ग्रंथ है। यह ग्रंथ हिंदू धर्म के लिए पूजनीय है। इसकी सर्वमान्यता के कारण ही विश्व की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। संचित कर्म मानव की जमा पूंजी है। यही समय आने पर प्रारब्ध बन जाती है। इसलिए मनुष्य को सत्कर्म करना चाहिए।